है। इस प्रकार अपने-अपने वेदोदयकाल में स्त्री-पुरूष एक दूसरे की अभिलाषा करते हैं।"[७३]

गणधर अचलभ्राता और मेतार्य ने गुणशील चैत्य में मासिक अनशन कर निर्वाण प्राप्त किया।

इस साल का वर्षावास भगवान ने नालन्दा में किया।

उनचालीवां वर्ष

चातुर्मास के अनन्तर नालंदा से विचरते हुए भगवान विदेह जनपद में पधारे। देश के अन्यान्य ग्राम, नगरों में प्रवचन का उपदेश देते हुए आप मिथिला पधारे। यहां पर राजा जितशत्रु ने आपका बड़ा आदर किया।

समवसरण मिथिला के बाहर माणिभद्र चैत्य में हुआ। राजा जितशत्रु और रानी धारणी प्रमुख राज-परिवार तथा भाविक नगरजनों से चैत्य का मैदान विशाल धर्मसभा के रूप में परिवर्तित हो गया। आपने निर्ग्रन्थ प्रवचन-उपदेश दिया। सभा जन संतुष्ट होकर अपने अपने स्थानों पर चले गए।

सभा-विसर्जन के बाद अनगार इन्द्रभूति ने वन्दन पुरस्सर ज्योतिषशास्त्र से सम्बन्धित अनेक प्रश्न किए जिनमें बीस प्रश्न मुख्य थे।

गौतम ने पूछा-

(१) सूर्य प्रतिवर्ष कितने मण्डलों का भ्रमण करता है?

(२) सूर्य तिर्यक्भ्रमण कैसे करता है?

(३) सूर्य तथा चन्द्र कितने क्षेत्र को प्रकाशित करते हैं?

(४) प्रकाशक का अवस्थान कैसा है?

(५) सूर्य का प्रकाश कहां रूकता है?

(६) ओजस् (प्रकाश) की स्थिति कितने काल की है?

(७) कौन से पुद्‌गल सूर्य के प्रकाश का स्पर्श करते हैं?

(८) सूर्योदय की स्थिति कैसी है?

(९) पौरूषी छाया का क्या परिणाम है?

(१०) योग किसे कहते हैं?

(११) संवत्सरों का प्रारम्भ कहां से होता है?

(१२) संवत्सर कितने कहे हैं?

(१३) चन्द्रमा की वृद्धि हानि क्यों दीखती है?

(१४) किस समय चांद की चांदनी बढ़ती है?

(१५) चन्द्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और तारा इनमें शीघ्र गति कौन है?

(१६) चांद की चांदनी का लक्षण क्या है?

(१७) चन्द्रादि ग्रहों का च्यवन और उपपात कैसे होता है?

(१८) भूतल से चन्द्र आदि ग्रह कितने ऊंचे हैं?

(१९) चन्द्र, सूर्यादि कितने हैं?

(२०) चन्द्र, सूर्यादि क्या हैं?

गौतम के उक्त प्रश्नों के उत्तर भगवान महावीर ने इतने विस्तृत रूप से दिए हैं कि उनसे सूर्यप्रज्ञप्ति,

चन्द्रप्रज्ञप्ति जैसे प्राचीन पद्धति के ज्योतिष-विज्ञान के मौलिक ग्रन्थ बन गए हैं। उक्त प्रश्नों के उत्तरों से हम इस ग्रन्थ को जटिल बनाना उचित नहीं समझते।

भगवान ने इस साल का वर्षावास मिथिला में ही बिताया।

चालीसवां वर्ष

चातुर्मास की समाप्ति पर भगवान ने मिथिला से मगध की तरफ विहार कर दिया और क्रमशः राजगृह पधारकर गुणशील चैत्य में वास किया।

इकतालीसवां वर्ष

चातुर्मास की समाप्ति पर भगवान ने मिथिला से मगध की तरफ विहार कर दिया और क्रमशः राजगृह पधारकर गुणशील चैत्य में वास किया।

वहां का राजन व प्रजा प्रभु महावीर के प्रति समर्पित थी। इसी कारण भगवान महावीर को ज्यादा वर्षावास इसी नगरी में हुए। यही यत्र पहाड़ों में एक पहाड़ वैभारगिरि है उसी स्थान पर प्रभु महावीर का समोशरण हुआ।

उष्ण जलहद के विषय में प्रश्न

एक समय वैभारगिरि के नीचे उष्ण जलहद के विषय में इन्द्रभूति गौतम ने पूछा- ''भगवन्! अन्यतीर्थिक यह कहते हैं कि राजगृह नगर के बाहर वैभार पर्वत के नीचे एक बड़ा भारी जलहद है जिसकी लम्बाई और चौड़ाई अनेक योजन परिमित है। उसके किनारे विविध जाति के वृक्षों की घटाओं से सुशोभित हैं। उसमें से बड़े-बड़े बादल तैयार होते और बरसते हैं। इसके अतिरिक्त उसमें जो अधिक जलसमूह होता है, वही उष्ण जलस्रोतों के रूप में निरन्तर बहता रहता है। भगवन्! क्या अन्यतीर्थिकों का यह कथन सत्य है?''

महावीर-''गौतम! अन्यतीर्थिकों का यह कथन सत्य नहीं है। इस विषय में मेरा मत यह है कि राजगृह के बाहर वैभार पर्वत के पास अत्यन्त उष्ण स्थान के पास से निकलने वाला 'महातपस्तीरप्रभव' नामक जलस्रोत है, जिसकी लम्बाई-चौड़ाई पांच-पांच सौ धनुष्य परिमाण है। इसके किनारों पर अनेक जाति के वृक्ष लगे हुए हैं जिनसे इनकी शोभा दर्शनीय हो गई है। इस उष्ण जलस्रोत में उष्ण योनि के जीव उत्पन्न होते और मरते हैं तथा उष्ण स्वभाव के जल-पुद्गल भी उष्ण जल के रूप में इसमें आते और निकलते रहते हैं। यही कारण है कि स्रोत में से नित्य और सतत उष्ण जल का प्रवाह बाहर बहता रहता है। महातपस्तीरप्रभव जलस्रोत यही हकीकत है और यही इसका रहस्य है।''

गौतम-''भगवन्! आपका कथन सत्य है। महातपस्तीरप्रभव जलस्रोत का रहस्य यही हो सकता है।''

आयुष्य कर्म के विषय में प्रश्न

गौतम ने कहा-''भगवन्! अन्यतीर्थिक कहते हैं- नियमानुसार गठे हुए और नियत अन्तर पर गांठों वाले एक जाल के जैसी अनेक जीवों के अनेक भवसंचित आयुष्यों की रचना होती है। जिस प्रकार जाल में सब गांठें नियत अन्तर पर रहती हैं और एक दूसरी के साथ सम्बन्धित रहती हैं, उसी तरह सब आयुष्य एक-दूसरे से नियत अन्तर पर रहे हुए होते हैं। इनमें से एक जीव एक समय में दो आयुष्यों को भोगता है- इहभविक और पारभाविक। जिस समय इहभाविक आयुष्य भोगता है उसी समय पारभाविक

भी भोगता है। भगवन्! क्या अन्यतीर्थिकों की यह मान्यता ठीक है?"[८८]

महावीर-"गौतम! इस विषय में अन्यतीर्थिक जो कहते हैं वह ठीक नहीं है। हमारा मत यह है कि अनेक जीवों के आयुष्य जाल-ग्रन्थियों के आकार के नहीं होते परन्तु एक जीव के अनेक भवों के आयुष्य वैसे हो सकते हैं तथा एक जीव एक समय में दो आयुष्यों को भोग नहीं सकता किन्तु एक ही को भोग सकता है- इहभाविक आयुष्य को अथवा पारभाविक आयुष्य को।"[८९]

मनुष्यलोक की मानव बस्ती के सम्बन्ध में

गौतम बोले- "भगवन्! अन्यतीर्थिक कहते हैं- जैसे युवा पुरुष अपने हाथ में युवती-स्त्री का हाथ पकड़ता है अथवा जिस प्रकार चक्रनाभि से अरक भिड़े रहते हैं, वैसे ही वह मनुष्यलोक चार सौ-पांच सौ योजन तक मनुष्यों से भरा हुआ है। भगवन्! क्या अन्यतीर्थिकों का यह कथन सत्य है?"

महावीर-"नहीं गौतम! अन्यतीर्थिकों की यह मान्यता ठीक नहीं है। इस विषय में मेरा कहना यह है कि मनुष्यलोक तो नहीं पर नरकलोक इस प्रकार चार सौ-पांच सौ योजन पर्यन्त नारक जीवों से ठसाठस भरा हुआ रहता है।"[९०]

सुख अथवा दुःख के परिमाण के विषय में

गौतम ने पूछा-"भगवन्! अन्यतीर्थिक यह कहते हैं- इस राजगृह नगर में जितने जीव हैं, उन सबके सुखों अथवा दुःखों को इकट्ठा करके बेर की गुठली, बाल, कलाय, जूं अथवा लीख जितने परिमाण में भी बताने में कोई समर्थ नहीं है। क्या अन्यतीर्थिकों का यह कथन यथार्थ है?"

महावीर-"गौतम! अन्यतीर्थिकों का उक्त कथन ठीक नहीं है। इस विषय में मेरा सिद्धान्त यह है- राजगृह के तो क्या संसारभर के सब जीवों के सुख-दुःखों को इकट्ठा करके लिक्षा-परिमाण भी दिखाने को कोई समर्थ नहीं है। गौतम! सम्पूर्ण लोक के सुख-दुःख को इकट्ठा करने पर भी उसका पिण्ड लिक्षा के बराबर भी क्यों नहीं होता, इसको मैं एक दृष्टान्त से समझाऊंगा। मान लो कि कोई एक महान् सामर्थ्यवान् देव है। वह सुगन्धी से भरा हुआ एक डिब्बा लेकर लक्ष-योजन परिमाण वाले सम्पूर्ण जम्बूद्वीप के ऊपर पलक मात्र में इक्कीस बार चक्कर काटता हुआ डिब्बे की तमाम सुगन्धी सारे जम्बूद्वीप में बिखेर दे, तब वे सुगन्धी-पुद्गल सम्पूर्ण जम्बूद्वीप का स्पर्श करेंगे या नहीं?"

गौतम-"हां, भगवन्! वे सूक्ष्म सुगन्धी-परमाणु सम्पूर्ण जम्बूद्वीप में फैलकर उसका स्पर्श कर लेंगे।"

महावीर-"गौतम! अगर उन सूक्ष्म सुगन्धी-परमाणुओं को कोई फिर इकट्ठा करना चाहे तो क्या वह एक लिक्षा-परिमाण भी इक्ट्ठा करके दिखा सकता है?"

गौतम-"नहीं भगवन्! उन सूक्ष्म पुद्गलों को फिर इक्ट्ठा कर दिखाना अशक्य है।"

महावीर- इसी प्रकार लोकगत सर्वजीवों के सम्पूर्ण सुख-दुःखों को इकट्ठा करके लिक्षा-परिमाण भी दिखाने को कोई समर्थ नहीं है।"[९१]

एकान्त दुःखवेदना के सम्बन्ध में

गौतम ने पूछा-"भगवन्! अन्यतीर्थिक कहते हैं कि प्राण, भूत और सत्त्वनाधारी सर्वजीव एकान्त दुःख को भोगते हैं। क्या यह कथन सत्य है?"

महावीर-''नहीं गौतम! अन्यतीर्थिकों का उक्त कथन ठीक नहीं है। सिद्धान्त यह है कि कुछ जीव नित्य एकान्त दुःख को भोगते हैं और कभी-कभी सुख को। कुछ जीव नित्य एकान्त-सुख का अनुभव करते हैं और कभी-कभी दुःख का। तब कितने ही जीव सुख और दुःख को अनियमितता से भोगते हैं।

नारक जीव नित्य एकान्त-दुःख का अनुभव करते हैं और समय-विशेष में वे सुख को भी पाते हैं। भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिक देव एकान्त सुख का अनुभव करते हैं, पर समय-विशेष में वे दुःख को भी भोगते हैं। पृथ्वीकायिक आदि तिर्यञ्चगति के जीव और मनुष्य अनियमितता से सुख-दुःख को भोगते हैं। कभी वे सुख-विपाक को भोगते हैं और कभी दुःख विपाक को।''[१२]

इस वर्ष का वर्षावास भगवान महावीर ने राजगृह में किया।

बयालीसवां वर्ष

वर्षा चातुर्मास के बाद भी भगवान महावीर महीनों तक राजगृह में ठहरे। इस बीच उनके गणधर अव्यक्त, मण्डिक, मौर्यपुत्र और अकम्पित मासिक अनशनपूर्वक गुणशील चैत्य में निर्वाण को प्राप्त हुए।

पंचम दुषम-दुषमकाल (कलिकाल) का भारत और उसके मनुष्य

इन्द्रभूति गौतम ने पूछा-''भगवन्! अवसर्पिणी काल के दुषम-दुषमा समय के पूर्ण रूप से लग जाने पर जम्बूद्वीप के भारतवर्ष की क्या अवस्था होगी?''

महावीर-''गौतम! उस समय का भारत हाहाकार, आर्त्तनाद और कोलाहलमय होगा। विषमकाल के प्रभाव से कठोर, भयंकर और असह्य हवा के बवण्डर उठेंगे और आंधियां चलेंगी, जिनसे सब दिशाएं धूमिल, रजस्वला और अन्धकारमय हो जाएंगी। समय की रूक्षता के वश ऋतुएं विकृत हो जाएंगी, चन्द्र अधिक शीत फेंकेंगे और सूर्य अत्यधिक गर्मी करेंगे।

उस समय जोरदार बिजलियां चमकेंगी और प्रचण्ड पवन के साथ मूसलाधार पानी बरसेगा जिसका जल अरस, विरस, खारा, खट्टा, विषैला और तेजाब-सा तेज होगा। उससे निर्वाह न होकर विविध व्याधि-वेदनाओं की उत्पत्ति होगी। उन मेघों के जल से भारत के ग्रामों और नगरों के मनुष्यों और जानवरों का, आकाश में उड़ने वाले पक्षियों का, ग्राम्य तथा आरण्यक त्रस-स्थावर प्राणियों का और सब प्रकार की वनस्पतियों का विनाश हो जाएगा। एक वैताढय पर्वत को छोड़कर सभी पहाड़-पहाड़ियां वज्रपातों से खण्ड-विखण्ड हो जाएंगी। गंगा और सिन्धु को छोड़कर शेष नदी, नाले, सरोवर आदि ऊंचे नीचे स्थल समतल हो जाएंगे।''

गौतम-''भगवन्! तब भारत-भूमि की क्या दशा होगी?''

महावीर-''गौतम! उस समय भारतवर्ष की भूमि अंगाररूप, मुर्मररस्वरूप, भस्मस्वरूप, तपे हुए तवे और जलती हुई आग-सी गर्म, मरूस्थली सी बालुकामयी और छिछली झील सी काई (शैवाल), कीचड़ से दुर्गम होगी।''

गौतम-''भगवन्! तत्कालीन भारतवर्ष का मनुष्य समाज कैसा होगा?''

महावीर-''गौतम! तत्कालीन भारतवर्ष के मनुष्यों की दशा बड़ी दयनीय होगी। विरूप, विवर्ण, दुर्गन्ध, दुःस्पर्श और विरस शरीरों वाले होने से वे अप्रिय और अदर्शनीय होंगे। वे दीनस्वर, हीनस्वर, अनिष्टस्वर, अनादेयवचन, अविश्वसनीय, निर्लज्ज, कपटपट्टु, क्लेशप्रिय, हिंसक, वैरशील, अमर्याद, अकार्यरत और अविनीत होंगे। उनके नख बड़े, केश कपिल, वर्ण श्याम, सिर बेडौल और शरीर नसों से

लिपटा हुआ सा प्रतीत होने के कारण अदर्शनीय होगा।

उनके अंगोपांग वलों से संकुचित, मस्तक खुले घड़े से, आंख और नाक टेढ़े तथा मुख बुड्ढ़ों के से विरलदन्त वलों से भीषण होंगे। उनकी शारीरिक रचना निर्बल, आकार भोंडा और बैठने-उठने, खाने-पीने की क्रियाएं निन्दनीय होंगी। उनके शरीर विविध व्याधि-पीड़ित, गति स्खलनायुक्त और चेष्टाएं विकृत होंगी।

वे उत्साहहीन, सत्त्वहीन, तेजोहीन, शीतदेह, उष्णदेह, मलिनदेह, क्रोध-मान-माया से भरे, लोभी, दुःखग्रस्त, बहुधा धर्मसंज्ञाहीन और सम्यक्त्व से भ्रष्ट होंगे।

उनके शरीर हाथ भर के और उम्र सोलह अथवा बीस वर्ष की होगी।

वे पुत्र-पौत्रादि बहुल परिवारयुक्त होंगे।

उनकी संख्या परिमित होगी और वे गंगा-सिन्धु महानदियों के तटाश्रित पर्वत के किनारे बिलों में निवास करेंगे।''

गौतम-''भगवन्! उन मनुष्यों का आहार क्या होगा?''

महावीर-''गौतम! उस समय गंगा-सिन्धु महानदियों का प्रवाह रथमार्ग जितना चौड़ा होगा। उनकी गहराई चक्रनाभि से अधिक न होगी। उसका जल मत्स्य, कच्छपादि जलचर जीवों से व्याप्त होगा। जब सूर्योदय और सूर्यास्त का समय होगा, वे मनुष्य अपने-अपने बिलों से निकलकर नदियों में से मत्स्यादि जीवों को स्थल में ले जाएंगे और धूप में पके-भुने उन जलचरों का आहार करेंगे। दुषम-दुषमा के भारतीय मानवों की जीवनचर्या इक्कीस हजार वर्षों तक इसी तरह चलती रहेगी।''

गौतम्-''भगवन्! वे निश्शील, निर्गुण, निर्मर्याद, त्याग-व्रतहीन, बहुधा मांसाहारी और मत्स्याहारी मनुष्य मरकर कहां जाएंगे? कहां उत्पन्न होंगे?''

महावीर-''वे बहुधा नारक और तिर्यञ्च योनियों में उत्पन्न होंगे।''

राजगृह से विहार करते हुए भगवान अपापा पधारे। अपापा के उद्यान में समवसरण हुआ। गणधर के प्रश्नोत्तर में यहां पर भी भगवान महावीर ने काल-चक्र का सविस्तार वर्णन किया।

उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी काल, उनमें होने वाले मनुष्यों और उनकी उन्नत-अवनत स्थितियों का वर्णन करते हुए आपने वर्तमान अवसर्पिणी के दुषमा नामक पञ्चमारक का विशेष वर्णन किया।

आपने कहा- तीर्थंकरों के समय में यह भारतवर्ष धनधान्य से समृद्ध, नगर-गांवों से व्याप्त स्वर्ग सदृश होता है। तत्कालीन ग्राम-नगर समान, नगर-देवलोक समान, कौटुम्बिक राजातुल्य और राजा कुबेरतुल्य समृद्ध होते हैं। उस समय आचार्य चन्द्र समान, माता-पिता देवता समान, सास माता समान, श्वसुर पिता समान होते हैं। तत्कालीन जनसमाज धर्माधर्मविधिज्ञ, विनीत, सत्य-शौच-सम्पन्न, देव-गुरूपूजक और स्वदारसंतोषी होता है। विज्ञानवेत्ताओं की कदर होती है। कुल, शील तथा विद्या का मूल्य होता है। लोग ईति, उपद्रव, भय और शोक से मुक्त होते हैं। राजा जिन-भक्त होते हैं और जैनधर्म विरोधी बहुधा अपमानित होते हैं।

यह सब आज तक था। अब जब चौपन उत्तम पुरूष व्यतीत हो जाएंगे और केवली, मनःपर्ययज्ञानी, अवधिज्ञानी तथा श्रुतकेवली इन सबका विरह हो जाएगा तब भारतवर्ष की दशा इसके विपरीत होती जाएगी। प्रतिदिन मनुष्य समाज क्रोधादि कषाय-विष से विवेकहीन बनते जाएंगे। प्रबल जल-प्रवाह के आगे जैसे गढ़ छिन्न-भिन्न हो जाता है वैसे ही स्वच्छन्द लोक-प्रवाह के आगे हितकर मर्यादाएं छिन्न-भिन्न

हो जाएगी। ज्यों-ज्यों समय बीतता जाएगा जन समाज दया-दान-सत्यहीन और कुतीर्थिकों से मोहित होकर अधिकाधिक अधर्मशील होता जाएगा।

उस समय ग्राम श्मशानतुल्य, नगर प्रेतलोक सदृश, भद्रजन दास समान और राजा लोग यमदण्ड समान होंगे। लोभी राजा अपने सेवकों को पकड़ेंगे और सेवक नागरिकों को। इस प्रकार मत्स्यों की तरह दुर्बल सबलों से सताए जाएंगे। जो अन्त में हैं वे मध्य में और मध्य में हैं वे प्रत्यन्त होंगे। बिना पतवार के नाव की तरह देश डोलते रहेंगे। चोर धन लूटेंगे। राजा करों से राष्ट्रों को उत्पीड़ित करेंगे और न्यायाधिकारी रिश्वतखोरी में तत्पर रहेंगे। जनसमाज स्वजन-विरोधी, स्वार्थप्रिय, परोपकार-निरपेक्ष और अविचारितभाषी होगा। बहुधा उनके वचन सारहीन होंगे। मनुष्यों की धन-धान्य विषयक तृष्णा कभी शान्त नहीं होगी। वे संसार-निमग्न, दाक्षिण्यहीन, निर्लज्ज और धर्मश्रवण में प्रमादी होंगे।

दुषमाकाल के शिष्य गुरुओं की सेवा नहीं करेंगे और गुरु शिष्यों को शास्त्र का शिक्षण नहीं देंगे। गुरुकुलवास की मर्यादा उठ जाएगी। लोगों की बुद्धि धर्म में शिथिल हो जाएगी और पृथ्वी क्षुद्र जन्तुओं से भर जाएगी। देव पृथ्वी पर दृष्टिगोचर नहीं होंगे। पुत्र माता-पिता की अवज्ञा करेंगे और कटु वचन सुनाएंगे। हास्यों, भाषणों, कटाक्षों और सविलास निरीक्षणों से निर्लज्ज कुलवधुएं वेश्याओं को भी शिक्षण देंगी। श्रावक-श्राविका और दान-शील-तप-भावात्मक धर्म की हानि होगी।

थोड़े से कारण से श्रमणों और श्रमणियों में झगड़े होंगे। धर्म में शठता और चापलूसी का प्रवेश होगा। झूठे तोल-माप प्रचलित होंगे। बहुधा दुर्जन जीतेंगे और सज्जन दुःख पाएंगे।

विद्या, मंत्र, तंत्र, औषधि, मणि, पुष्प, फल, रस, रूप, आयुष्य, ऋद्धि, आकृति, ऊंचाई और धर्म इन सब उत्तम पदार्थों का ह्रास होगा और दुषम-दुषमा नामक छठे आरे में तो इनकी अत्यन्त ही हीनता हो जाएगी।

प्रतिदिन क्षीणता को प्राप्त होते हुए इस लोक में कृष्ण पक्ष में चन्द्र की तरह जो मनुष्य अपना जीवन धार्मिक बनाकर धर्म में व्यतीत करेंगे उन्हीं का जन्म सफल होगा।

इस हानिशील दुषमा समय के अन्त में दुःप्रसह आचार्य, फल्गुश्री साध्वी, नागिल श्रावक और सत्यश्री श्राविका इन चार मनुष्यों का चतुर्विधसंघ शेष रहेगा। विमलवाहन राजा और सुमुख अमात्य ये दुषमाकालीन भारतवर्ष के अन्तिम राजा और अमात्य होंगे।

दुषमा के अन्त में मनुष्य का शरीर दो हाथ भर और आयुष्य बीस वर्ष का होगा। दुषमा के अन्तिम दिन पूर्वाह्न में चारित्रधर्म का, मध्याह्न में राजधर्म का और अपराह्न में अग्नि का विच्छेद होगा।

यह इक्कीस हजार वर्ष का दुषमाकाल पूरा होकर इतने ही वर्षों का दुषम-दुषमा नामक छठा आरा लगेगा। तब धर्मनीति, राजनीति आदि के अभाव में लोक अनाथ होंगे। माता, पुत्रादि का व्यवहार लुप्त होगा और मनुष्यों में पशुवृत्तियां प्रचलित होंगी।

दुषम-दुषमा के प्रारम्भ में ही प्रचण्ड आंधियां चलेंगी और प्रलयकारी मेघ बरसेंगे जिनसे भारत भूमि के मनुष्यों और पशुओं का अधिकांश नाश हो जाएगा। अत्यल्पसंख्यक मनुष्य और पशु गंगा एवं सिन्धु के तटों पर पहाड़ी गुफाओं में रहेंगे और मांस मत्स्यों के आहार से जीवन निर्वाह करेंगे।

अवसर्पिणी काल के दुषम-दुषमा विभाग के बाद उत्सर्पिणी का इसी नाम का प्रथम आरा लगेगा और इक्कीस हजार वर्ष तक भारत की वही दशा रहेगी जो छठे आरे में थी।

उत्सर्पिणी का प्रथम आरा समाप्त होकर दूसरा लगेगा तब फिर शुभ समय का आरम्भ होगा।

पहले पुष्कर-संवर्तक मेघ बरसेगा जिससे भूमि का ताप दूर होगा। फिर क्षीर-मेघ बरसेगा जिससे धान्य की उत्पत्ति होगी। तीसरा घृत-मेघ बरसकर पदार्थों में चिकनाहट उत्पन्न करेगा। चौथा अमृत मेघ बरसेगा तब नाना प्रकार के रस-वीर्य वाली औषधियां उत्पन्न होंगी और अन्त में रस-मेघ बरसकर पृथ्वी आदि में रस की उत्पत्ति करेगा। ये पांचों ही मेघ सात-सात दिन तक निरन्तर बरसेंगे जिससे दुग्धप्राय बनी हुई इस भारत भूमि पर हरियाली, वृक्ष, लता, औषधि आदि प्रकट होंगे। भूमि की इस समद्धि को देखकर मनुष्य गुफा-बिलों से बाहर आकर मैदानों में बसेंगे और मांसाहार को छोड़कर वनस्पतिभोजी बनेंगे। प्रतिदिन उनमें रूप, रंग, बुद्धि, आयुष्य आदि की वृद्धि होगी और उत्सर्पिणी के दुषमा समय के अन्त तक वे पर्याप्त सभ्य बन जाएंगे। वे अपना सामाजिक संगठन करेंगे। ग्राम-नगर बसाकर रहेंगे। घोड़े, हाथी, बैल आदि का संग्रह करना सीखेंगे। पढ़ना, लिखना, शिल्पकला आदि का प्रचार होगा। अग्नि के प्रकट होने पर भोजन पकाना आदि विज्ञान प्रचलित होंगे। दुषमा के बाद दुषम-सुषमा नामक तृतीय आरक आरम्भ होगा जबकि एक-एक करके फिर चौबीस तीर्थंकर होंगे और तीर्थ-प्रवर्तन कर भारतवर्ष में धर्म का प्रचार करेंगे।

उत्सर्पिणी के दुषम-सुषमा के बाद क्रमशः सुषम-दुषमा, सुषमा और सुषम-सुषमा नामक चौथा, पांचवां और छठा ये तीन आरे होंगे। इनमें सुषम-दुषमा के आदि भाग में फिर धर्म-कर्म का विच्छेद हो जाएगा। तब जीवों के बड़े बड़े शरीर और बड़े बड़े आयुष्य होंगे। वे वनों में रहेंगे और दिव्य वनस्पतियों से अपना जीवन निर्वाह करेंगे। बड़े-बड़े शरीर और बड़े-बड़े आयुष्य होंगे। वे वनों में रहेंगे और दिव्य वनस्पतियों से अपना जीवन निर्वाह करेंगे।

फिर अवसर्पिणी काल लगेगा और प्रत्येक वस्तु का ह्रास होने लगेगा।

इस प्रकार अनन्त उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी इस संसार में व्यतीत हो गई और होंगी। जिन जीवों ने संसार-प्रवाह से निकलकर वास्तविक धर्म का आराधन किया, उन्हीं ने इस कालचक्र को पार कर स्व-स्वरूप को प्राप्त किया और करेंगे।''

काल-चक्र का सविस्तार स्वरूप निरूपण करके भगवान ने संसार के दुःखों और श्रमणों की भयंकरता दिखाई, जिसे सुनकर अनेक भव्य आत्माओं ने संसार से विरक्त होकर निर्ग्रन्थ-धर्म की शरण ली।

अंतिम वर्षावास व पुण्यपाल राजा के स्वप्न व भविष्य-कथन

प्रभु महावीर राजगृह से पावा पधारे। पावा में उस समय राजा हस्तीपाल राज्य करता था। उसकी रज्जुक सभा में प्रभु महावीर विराजे। प्रभु महावीर का यह अंतिम वर्षावास था। प्रभु महावीर पावापुरी के लोगों को उपदेश दे रहे थे।

एक दिन की बात है कि राजा पुण्यपाल ने भगवान महावीर से प्रार्थना की- ''प्रभु! मैंने आज रात विचित्र प्रकार के हाथी, बन्दर, क्षीरतरू, कौआ, सिंह, पद्म, बीज और कुम्भ यह आठ अशुभ स्वप्न देखे हैं, मुझे यह चिन्ता सता रही है कि कहीं इसका फल अमंगलदायक तो नहीं है?''

प्रभु महावीर ने प्रथम स्वप्न का उत्तर देते हुए कहा- भविष्य में विवेकशील श्रमणोपासक भी क्षणिक सुख के कारण हाथी की तरह रहेंगे। वह कष्ट की घड़ी में संयम ग्रहण करने का विचार नहीं करेंगे।

द्वितीय स्वप्न बन्दर इस बात का प्रतीक है कि भविष्य में बड़े आचार्य भी बन्दर की तरह चंचल वृत्ति

के, अल्प पराक्रमी, व्रत-पालन में प्रमादी होंगे। वे विचारशून्य, विवेकशून्य होंगे।

तृतीय स्वप्न में क्षीरतरू तुमने देखा है। इसका अर्थ है कि भविष्य में क्षुद्र भाव से दान देने वाले श्रावकों को पाखण्डी श्रमण चारों ओर से घेरे रहेंगे। वह आचारनिष्ठ श्रमणों को शिथिलाचारी और शिथिलाचारी को आचारनिष्ठ समझेंगे। पाखण्डी श्रमणों की गिनती बढ़ेगी।

चतुर्थ स्वप्न में तूने कौआ देखा। इसका अर्थ है कि भविष्य के साधु कौआ वृत्ति अंगीकार करेंगे। अधिकांश साधु वर्ग अनुशासन मर्यादा को त्यागकर पाखण्डपूर्ण पंथों का आश्रय लेंगे।

पांचवें स्वप्न में तूने सिंह को विपन्नावस्था में देखा है। इसका अर्थ है कि भविष्य में सिंह की तरह प्रबल धर्म भी निर्बल होगा। मिथ्यात्वी की पूजा होगी।

छठे स्वप्न में तुमने कमल देखा। इसका अर्थ है भविष्य के समय में प्रबल प्रभाव से प्रभावित होकर कुलीन व्यक्ति भी बुरी संगति में पड़कर धर्ममार्ग से विमुख होकर पापाचार का सेवन करेंगे।

सातवें स्वप्न में जो बीज तुमने देखा है। इसका अर्थ है कि जिस प्रकार एक अविवेकी किसान बढ़िया बीज को तो निकम्मी भूमि में बोता है और सड़े गले बीज को उपजाऊ भूमि में बोता है, इसी प्रकार श्रमणोपासक भी विवेक विस्मृत होकर सुपात्र को छोड़कर कुपात्र को दान देंगे।[३]

आठवें स्वप्न में तुमने जो कुम्भ देखा है। इसका अर्थ है कि भविष्य में सद्‌गुण सम्पन्न और आचारनिष्ठ श्रमण कम होंगे।''

राजा पुण्यपाल के स्वप्नों का फल जनसाधारण ने भी सुना। बहुत से लोगों ने संयम ग्रहण करने का निर्णय किया। फिर गणधर गौतम ने प्रभु महावीर से पांचवें व छठे आरे के भरत क्षेत्र में होने वाली घटनाओं का विस्तार से वर्णन सुना। इन घटनाओं को जनसाधारण ने भी सुना। भविष्य को अशुभ जानकर अनेकों ने साधुधर्म व श्रावक धर्म स्वीकार किया।

प्रभु महावीर के भगवतीसूत्र के अतिरिक्त विविध तीर्थकल्प में आचार्य जिनप्रभवसूरि ने लिखा है कि गणधर गौतम ने प्रश्न किया-''प्रभु! आपके परिनिर्वाण के पश्चात् प्रमुख घटनाएं कौन सी होंगी?''

प्रभु महावीर ने समाधान करते हुए कहा- मेरे मोक्षगमन के तीन वर्ष और साढ़े आठ माह के पश्चात् पांचवां आरा शुरू होगा। मेरे निर्वाण के १२ वर्ष बाद गणधर गौतम मोक्षगमन करेंगे। बीस वर्ष बाद सुधर्मा स्वामी को मोक्षगमन होगा और चौंसठ वर्ष बाद अन्तिम केवली जम्बू स्वामी मोक्ष पधारेंगे।

जम्बू के निर्वाण के बाद भरत क्षेत्र में ये बातें उत्पन्न नहीं होंगी। मनःपर्यवज्ञान, परम अवधिज्ञान, पुलाकलब्धि, आहारक शरीर, क्षपकश्रेणी, जिनकल्प, परिहार-विशुद्धि सूक्ष्मसम्पराय, यथाख्यातचारित्र, केवलज्ञान और परिनिर्वाण।[४]

मेरे निर्वाण के पश्चात् मेरे शासन में २००४ युग-प्रधान आचार्य होंगे। इनमें प्रथम आर्य सुधर्मा व अन्तिम पंचम आरे के आचार्य दुःप्रसह होंगे।

मेरे निर्वाण के १७० वर्ष पश्चात् आचार्य भद्रबाहु का स्वर्गारोहण होगा। उनके काल के पश्चात् अन्तिम चार पूर्व, समचतुरस्र संस्थान, वज्र ऋषभनाराच संहनन और महाप्राण ध्यान ये चार बातें भरत क्षेत्र से समाप्त हो जाएंगी।

मेरे निर्वाण के पांच सौ वर्ष पश्चात् आर्य वज्र के समय १०वां पूर्व और प्रथम संहनन चतुष्क नष्ट हो जाएंगे।

मेरे निर्वाण के पश्चात् पालक का राज्यकाल ६० वर्ष, नन्द का राज्यकाल १५५ वर्ष, मौर्य का

राज्यकाल १०८ वर्ष, पुण्यमित्र का ३० वर्ष, बालमित्र और भानुमित्र का ६० वर्ष, बरवाहन का ४० वर्ष, गर्दभिल्ल का १३ वर्ष, शक का ४ वर्ष होगा। और मेरे निर्वाण के ४७० वर्ष बाद महाराजा विक्रमादित्य सम्राट् होगा, जो अपने नाम से संवत् चलाएगा।

मेरे निर्वाण के ४५५ वर्ष के बाद गर्दभिल्ल के राज्य को नष्ट करने वाला कालकाचार्य होगा।[५]

श्रमणों की विशुद्ध परम्परा विलुप्त हो जाएगी।''

प्रभु महावीर के इस प्रकार का भविष्य-कथन सुनकर हस्तिपाल आदि राजा ने दीक्षा स्वीकार की।

चातुर्मास के ३ महीने पूर्ण हुए। कार्तिक मास का कृष्ण पक्ष चल रहा था। प्रभु महावीर अपने समवसरण से जनकल्याण की अमृतमय वाणी सुना रहे थे। उस समय प्रभु के समवसरण में काशी, कौशल के नौलच्छवी नौ मल्ल राजा भी प्रभु महावीर का उपदेश सुन रहे थे। इनके साथ प्रभु महावीर के सांसारिक बड़े भ्राता राजा नन्दीवर्द्धन, बहिन सुदर्शना भी उपदेश सुन रही थीं।

शक्र की आयु में वृद्धि की प्रार्थना

जब प्रभु महावीर का परिनिर्वाण का समय सन्निकट आया, तो शक्रेन्द्र का आसन कम्पायमान हुआ। देवों के परिवार उपस्थित होने लगे।

शक्र भाव-विह्वलता के साथ प्रभु महावीर के समवसरण में पहुंचा और निवेदन करने लगा-''प्रभु! आप सर्वज्ञ और सर्व शक्तिमान हैं। आपका गर्भ, जन्म, दीक्षा और केवलज्ञान हस्तोत्तरा नक्षत्र में हुए थे। इन नक्षत्रों में अब २००० वर्ष तक चलने वाला भस्मक ग्रह आने वाला है, जिसके प्रभाव से जिनशासन व धर्म को बहुत हानि होगी। २००० वर्ष बाद आपके निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थी का सम्मान सत्कार पुनः प्रकट होगा, इसलिए आप अपना आयुष्य बल बढ़ा लें, जिससे यह ग्रह आपके धर्मसंघ को प्रभावित न कर सकें।''

प्रभु महावीर शक्रेन्द्र की बात से मुस्कराए, फिर बोले- शुक्र! आयुष्य कभी बढ़ाया नहीं जा सकता। ऐसा न कभी हुआ है, न कभी होगा। दुःषमा काल के प्रभाव से जिन शासन में जो बाधा होती है, वह तो होगी ही।''[६]

अन्तिम देशना और परिनिर्वाण

अब प्रभु महावीर का परिनिर्वाण का समय आ चुका था। इस बात को प्रभु स्वयं जानते थे। इसलिए उन्हें अपने प्रिय शिष्य लब्धिकारी गौतम का ध्यान आया। प्रभु महावीर ने करुणा की। गौतम स्वामी को पास के गांव में देव शर्मा ब्राह्मण को प्रतिबोधित करने भेज दिया, पर गणधर गौतम तो साधना व सहजता के पुंज थे। वैसे भी गुरु-आज्ञा शिष्य का सर्वस्व होती है। प्रभु महावीर जानते थे कि मेरे निर्वाण से गणधर गौतम को कितनी पीड़ा होगी।[७]

प्रभु महावीर ने अपनी अन्तिम देशना शुरू की। यह उपदेश १६ पहर तक चला। उस देशना में ५५ अध्ययन पुण्यफल विपाक के, ५५ अध्ययन पापफल विपाक के कहे।[८] आजकल यह अध्ययन १०-१० अध्ययन के रूप में मिलते हैं। बाकी अध्ययन लुप्त हो गए हैं।

प्रभु महावीर ने छत्तीस अध्ययनों वाला अपृष्ठ व्याकरण फरमाया, जो उत्तराध्ययनसूत्र के रूप में विश्वविख्यात है।

निर्वाण प्रक्रिया

सैंतीसवां अध्ययन का नाम प्रधान था। उसका कथन करते-करते प्रभु महावीर पर्यंकासन में स्थिर हो गए।

भगवान महावीर ने बादर काययोग में स्थिर रहकर बादर मनोयोग, बादर वचनयोग का निरोध किया।

फिर काययोग से स्थित रहकर बाहर काययोग को रोका। वाणी और मन के सूक्ष्म योग को रोका। शुक्लध्यान के ''सूक्ष्म क्रियाऽप्रतिपाती'' नामक तृतीय चरण को प्राप्त कर सूक्ष्म काययोग निरुन्धन किया।

समुच्छिन्न क्रिया, निवृत्ति नामक शुक्लध्यान का चतुर्थ चरण प्राप्त किया। पुनः अ-इ-उ, ऋ, लृ के उच्चारण काल जितनी शैलेशी अवस्था को प्राप्त कर चतुर्विध अघाती कर्मफल का क्षय कर भगवान महावीर सिद्ध, बुद्ध और मुक्त हुए। उनका जन्म-मरण समाप्त हो गया। वह वीतराग परमात्मा बन गए। वह निरंजन व अशरीर आत्मा सिद्धशिला पर जा विराजे। आचार्य भद्रबाहु ने निर्वाण-कल्याणक का चित्र इस प्रकार प्रस्तुत किया है-

उस समय वर्षा ऋतु का चतुर्थ मास था। कृष्ण पक्ष था। पन्द्रहवां दिन था। पक्ष की चरम रात्रि अमावस्या थी। एक युग के पांच संवत्सर होते हैं। उनमें यह चन्द्रनाभ नामक द्वितीय संवत्सर था। एक वर्ष के बारह महीने होते हैं उनमें वह प्रीतिवर्द्धन नामक चतुर्थ मास था। एक मास में दो पक्ष होते हैं उनमें वह नन्दीवर्धन नाम का पक्ष था। एक पक्ष के पन्द्रह दिन होते हैं। उनमें अग्निवेश्य नामक पन्द्रहवां दिन था, जिसे उपशम नाम से कहा जाता है। पक्ष में पन्द्रह रातें होती हैं। वह देवानन्दा नाम की पन्द्रहवीं रात्रि थी, जो निरति के नाम से विश्रुत थी। उस समय अर्च नाम का लव था, मुहूर्त्त प्राण था, सिंह नाम का स्तोक था, नाग नाम का चरण था, एक अहोरात्रि में तीस मुहूर्त्त होते हैं, उस समय सर्वार्थसिद्ध मुहूर्त्त था। स्वाति नक्षत्र में चन्द्रमा का योग था।[१९]

गौतम स्वामी : केवलज्ञानी

जैसे पहले कहा गया है कि प्रभु महावीर ने गौतम स्वामी को अपने परिनिर्वाण से पूर्व देव शर्मा को प्रतिबोध देने भेजा था। दूर भेजने का कारण यह था कि निर्वाण के समय अधिक स्नेहाकुल न हो।

देव शर्मा को प्रतिबोध देकर जब गौतम स्वामी लौटने लगे, तो रात्रि हो चुकी थी। साधु चर्या का ध्यान रखकर वह उसी गांव में रुक गए। यहीं उन्हें प्रभु महावीर के निर्वाण का समाचार मिला। आज गौतम को अपूर्व वज्रघात लगा। प्रभु महावीर के अन्तेवासी गौतम कभी एक पल के लिए भी प्रभु से अलग नहीं हुए थे। उन्हें इस बात का ज्यादा दुःख था कि ''प्रभु ने मुझे अन्तिम समय अपने दर्शन करने का सौभाग्य क्यों न दिया? क्या मुझे मोक्षमार्ग में उन्होंने बाधक समझा? क्या मैं उनकी मोक्षलक्ष्मी छीन लेता? क्या मैं अज्ञानी था जो सारी आयु प्रभु महावीर को समझ न सका?''

कुछ पल के लिए गौतम फूट-फूटकर रोने लगा। फिर चीखकर कहने लगे- ''प्रभु! आप तो सर्वज्ञ थे। मेरी कमी आप बता देते। मुझे दूर करने की जरूरत क्या थी?

अब मैं किसे देखूंगा? किसे गुरु मानकर प्रणाम करूंगा। अब मुझे 'गोयमा-गोयमा' कौन कहेगा? अब मैं किससे प्रश्नों के समाधान पाऊंगा?

इस प्रकार विलाप चलता रहा। गौतम दुःखी होते गए। मन की स्थिति बदली। कुछ संभले और सोचने लगे-

'मैं भी कितना अज्ञानी था। सारी आयु, उस वीतराग परमात्मा को पहचान न सका। वह मुझे हर बार प्रमाद-त्याग का उपदेश देते। पर मैं उनके स्नेह को त्याग न सका। प्रभु महावीर तो जन्मजात राग-द्वेष से मुक्त थे। वह तो हमारे उपकारी थे। उन्होंने हमारे कल्याण के लिए राजपाट छोड़ा। परिवार का मोह तोड़ा। जंगलों में कष्ट झेले। वह सब हमारे लिए ही तो थे। उनकी कृपा से संसार के जीव मोक्षमार्ग पा गए। वह मेरे अकेले के थोड़े ही थे। वह तो सबके थे। वह रागी नहीं थे। उनकी मीठी वाणी में मुझे राग दिखाई देता था। वह सच कहते थे कि मृत्यु शाश्वत है, इसका कोई भरोसा नहीं। राग-द्वेष के कारण कर्मबन्ध होता है। यह कर्म बीज है। मुझे प्रभु महावीर की शिक्षा को ध्यान में रखकर राग-द्वेष त्यागना है।'

इस प्रकार चिंतन करते-करते गौतम के सब बंधन छूट गए, उन्हें भी आत्मा को परमात्मा बनाने वाला केवलज्ञान प्राप्त हो गया।

एक रात्रि में दो मंगलमय घटनाएं घट गई। प्रभु महावीर का निर्वाण, गौतम स्वामी का केवलज्ञान। देवों ने दिव्यध्वनि के साथ पुष्प-वृष्टि की।

गणधर इन्द्रभूति गौतम को मुक्ति का वरदान

हम पिछले घटना-क्रम में वर्णन करते आए हैं कि गणधर गौतम को केवलज्ञान उत्पन्न नहीं हो रहा था। उनके शिष्य प्रशिष्य कब के आत्म-कल्याण पर मोक्ष पधार चुके थे। वह स्वयं हर समय तपस्या, साधना, ध्यान, स्वाध्याय में लीन रहते थे। पर वह अब भी छद्मस्थ ही रहे। उनके मन को गहन चोट लगी।

गौतम को वह रुकावट समझ नहीं आ रही थी, जो उनको केवलज्ञान नहीं हो रहा था। वह आत्म-निरीक्षण करने लगे, पर उन्हें रुकावट का पता नहीं चल रहा था।

सर्वज्ञ प्रभु महावीर भी गणधर गौतम के दुःख से परिचित थे। उन्होंने कई बार गौतम को इसका कारण बताते हुए कहा था-''गौतम! तुम्हारे मन में मेरे प्रति अनुराग है, स्नेह है। स्नेह-बंधन के कारण ही तुम अपने मोह का क्षय नहीं कर पा रहे। वह मोह ही सर्वज्ञता में बाधक बन रहा है।

गौतम! तुम अतीत काल में मेरे साथ स्नेह-बंधन में बंधे हो। तुम जन्म-जन्म से मेरे प्रशंसक रहे हो, मेरे परिचित रहे हो। अनेक जन्मों में मेरी सेवा करते रहे हो, मेरा अनुसरण करते रहे हो और प्रेम के कारण मेरे पीछे-पीछे दौड़ते रहे हो। पिछले देवभव एवं मनुष्यभव में भी तुम मेरे साथी रहे हो। अपना स्नेह बंधन सुदीर्घकालीन है। मैंने उसे तोड़ दिया है। तुम अभी उस बंधन को नहीं तोड़ पाए। विश्वास करो, तुम भी बहुत शीघ्र बंधन से मुक्त होकर, अब यहां से देहमुक्त होकर हम दोनों एक समान एक लक्ष्य, भेदरहित, तुल्य रूप प्राप्त कर लेंगे।''[१००]

जब संसार के सभी धर्मों का अवलोकन करते हैं तो भक्त कभी भगवान नहीं बन पाया। भक्त भक्त रहा है और प्रभु से आशीर्वाद पाता रहा है। पर यह जैन परम्परा है जहां भक्त को भी भगवान बनने का अवसर मिला है। इस घटना से यह भी पता लगा है कि गुरु को शिष्य के आत्म-कल्याण की कितनी चिंता रहती है।

यह प्रभु महावीर की महानता थी, पर गणधर गौतम इन्द्रभूति का प्रभु महावीर के प्रति समर्पण चरम सीमा पर पहुंच चुका था। उन्होंने मोक्षलक्ष्मी के स्थान पर प्रभु-भक्ति को स्थान दिया। कितना स्वार्थरहित उनका जीवन था? समर्पण का जीता-जागता प्रमाण गणधर गौतम से बढ़कर कहीं नहीं दीखता। इसी समर्पण के कारण वह प्रभु के आशीर्वाद का पात्र बना। पर प्रभु महावीर ने गौतम को वरदान दिया-''तुम भी मेरे समान सिद्ध, बुद्ध, अमर, मुक्त बनोगे।'' इस वरदान को पाकर गणधर गौतम की आत्मा को परम शान्ति मिली। गणधर गौतम चार ज्ञान के धारक थे। प्रभु महावीर से उन्हें १४ पूर्वों का ज्ञान प्राप्त हुआ था। ११ अंगों के ज्ञाता थे।

प्रभु महावीर से वह एक क्षण भी कभी दूर नहीं रहे। प्रभु महावीर ने भी उन्हें अपना प्रिय शिष्य माना है। वह सरलात्मा थे। विनय के प्रतीक थे। प्रभु महावीर से आयु में बड़े थे। लब्धि के धारक होने के साथ-साथ वह रत्नत्रय की साधना में स्वयं को लीन रखते थे। वह किसी प्रकार के अहं से मुक्त थे। जैन परम्परा में गणधर गौतम को मंगल माना है। उनका नाम-स्मरण भक्तों को दुःख दूर करने वाला है।

दीवाली और प्रभु का निर्वाण महोत्सव

आचार्य भद्रबाहु ने कल्पसूत्र में उल्लेख किया है जिस रात्रि को भगवान महावीर का निर्वाण हुआ, उस रात्रि से ९ काशी, ९ लिच्छवी, १८ काशी कौशल के राजाओं ने पौषध व्रत अंगीकार कर रखा था।

अमावस्या का अंधेरा था। उन राजाओं ने कहा-''आज संसार से भाव उद्योत उठ गया है अतः अब हम द्रव्य उद्योत करेंगे।''

जिस रात्रि प्रभु महावीर का परिनिर्वाण हुआ उस रात्रि को देवियों के गमनागमन से भूमण्डल आलोकित हुआ। अंधकार मिटाने के लिए मानवों ने दीप संजोए। इस प्रकार दीपमाला पर्व का प्रारम्भ हुआ।[१०१]

भगवान महावीर के निर्वाण का समाचार सुनकर सुर-असुर जाति के सभी इन्द्र अपने परिवारों सहित धरती पर पहुंचे। सभी देव अपने को अनाथ मान रहे थे। भाव-विह्वल थे।

शुक्र के आदेश से गोशीर्ष चन्दन और क्षीरोदक लाया गया। क्षीरोदक से प्रभु महावीर के पार्थिक शरीर को स्नान कराया गया। फिर चन्दन का लेप किया गया।

दिव्य वस्त्र ओढ़ाया गया। उसके पश्चात् शरीर को देव-निर्मित शिविका में रखा गया।

इन्द्र ने शिविका उठाई। संस्कार स्थल पर चन्दन की चिता में प्रभु का शरीर रखा गया। अग्निकुमार ने अग्नि प्रज्वलित की। वायु कुमार देवों ने वायु प्रज्वलित की।

अन्य देवों ने धृत और मधु चिता में उड़ेला। इस प्रकार प्रभु महावीर का अंतिम संस्कार पावापुरी में सम्पन्न हुआ।

फिर मेघकुमार ने जल की वर्षा कर चिता शांत की। शक्रेन्द्र ने ऊपर की दाईं दाढ़ों का ईशानेन्द्र ने बाईं दाढ़ों का संग्रह किया। इस प्रकार चमरेन्द्र और बलिन्द्र ने नीचे की दाढ़ों को लिया। अन्य देवों ने दांत और अस्थि-खण्डों को लिया। मानवों के हिस्से भस्म आई।[१०२]

भगवान महावीर के बड़े भ्राता नन्दीवर्द्धन कुण्डलपुर के राजा थे। वह जब प्रभु महावीर का निर्वाण हुआ, तब उपस्थित थे। उन्हें इतना आघात पहुंचा कि उन्होंने खाना-पीना तक छोड़ दिया।

बहिन सुदर्शना ने उन्हें अपने घर बुलाकर संसार की क्षण-भंगुरता का ज्ञान कराया। साथ भोजन

करवाया। भोजन के उपरांत तिलक किया। उस दिन का नाम भैयादूज पड़ा।

भगवान महावीर सिंह गति को प्राप्त हो गए। उनके निर्वाण स्थल का स्मारक उन गौरवगाथा गाता हुआ, मानवता को अहिंसा, अनेकांतवाद व अपरिग्रह का संदेश दे रहा है। इस स्मारक का निर्माण राजा नंदीवर्द्धन ने करवाया था।

---

१. (क) ज्ञाताधर्मकथांग 1/11,
(ख) त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र १०/६/३९२-४०६
(ग) महावीर चरियं (गुणचन्द्र) प्रस्ताव, ८
२. त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र १०/६/४३०
३. (क) आचारांगसूत्र
(ख) कल्पसूत्र
४. (क) भगवती ४/६/३८१
(ख) त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र १०/८/१०-११
५. (क) भगवती ९/६
(ख) महावीर चरियं(गुणचन्द्र) प्रस्तावना, प. २५१-२६०
(ग) त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र १०/८/१-२७
६. भगवती, श. ९/३३३
७. (क) त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र १०/८/३९
(ख) महावीर चरियं (गुणचन्द्र) ८/२६१
८. (क) महावीर चरियं (गुणचन्द्र)
(ख) त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र १०/८/३०
९. भगवती, श. १२, उ. २
१०. अन्तकृदशा, अनुत्तरोपपाईदसाओ, पृ. ३४ (एन.पी.वैद्य सम्पादित)
११. उपासकदशांगसूत्र, अ. १ (आचार्य श्री आत्माराम जी)
१२. (क) त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र १०/१०/८४
(ख) उपदेशमाला सटीक, गा. २०, प. २५६
(ग) भरत-बाहुबलि, भाग १, प. १०७
१३. त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र १०/१०/१२३
१४. वही १०/१०/१३७-१३८
१५. वही १०/१०/१६१-१८१
१६. इस चैत्य का सुन्दर वर्णन उववाईसूत्र में उपलब्ध होता है।
१७. विपाकसूत्र, द्वितीय श्रुतस्कन्ध, नौवां अध्ययन
१८. भगवती, श. १६, उ. ६
१९. (क) उत्तराध्ययन भावविजयगणी की टीका १८/५, प.३८०
(ख) आवश्यकचूर्णि, उत्तरार्द्ध, प. १६४
२०. (क) आवश्यकचूर्णि ३९९
(ख) उत्तरा. नेमिचन्द्र, पृ. २५१
(ग) उत्तराध्ययन भावविजयगणी १८/५, पत्र ३८०
२१. आवश्यकचूर्णि ३९९
२२. (क) बृहत्कल्पभाषा वृत्ति सहित, विभाग २, गा. ९९७-९९९, पृ. ३१५
(ख) भगवतीसूत्र, श. १३, उ. ६
२३. आगम और त्रिपिटक : एक अनुशीलन, पृ २
२४. (क) आवश्यकचूर्णि, पृ. २३४,
(ख) त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र १०/१
२५. त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र १०/९
२६. (क) आवश्यकचूर्णि
(ख) उत्तराध्ययन, अ. १८
२७. उपासकदशांग, अ.३
२८. वही, अ.४
२९. भगवती, श. ११, उ. १२, सू. ६
३०. वही ११/१२/८
३१. उपासकदशांग, अ.९
३२. अन्तकृद्दशांग, वर्ग ३, अ. ४
३३. श्रेणिक चरित्र (त्रिलोक ऋषि जी कृत)
३४. त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र १०/९/४८-५०
३५. महावीर चरियं ८, प्रस्ताव, पृ. ३३४/१
३६. अनुत्तरौपपातिक, वर्ग १, अध्ययन १
३७. वही, वर्ग २, अ. १-१३
३८. (क) अन्तकृद्दशांग, वर्ग ७, अ. १-१३
(ख) अनुत्तरौपपातिक, वर्ग १-२, अन्तकृद्दशांग, वर्ग ७, अ. १-१३
३९. (क) सूत्रकृतांग निर्युक्ति टीका, श्रु. २, अ. ६, प.१३६,
(ख) त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र १०/७/१७७-१७९
४०. भारतीय इतिहास : एक दृष्टि, पृ. ६७-६८
४१. सूत्रकृतांग सूत्र श्रुत. २ अ. ६ शीलांक वृत्ति
४१ अ भगवती, श. १२, उ. १२
४२. आवश्यकचूर्णि पृ.९१
४३. अनुत्तरौपपातिक, अ. १
४४. वही, अ. १
४५. भगवतीसूत्र सटीक, श. ५, उ.४, सू.१८८, प. २११-२
४६. वही, श. ५, उ. ४, प. २११-१-२
४७. अन्तकृद्दशांग
४८. उपासकदशांग, अ. ८
४९. भगवती, श. ५, उ. ९
५०. वही, श. १, उ. ६
५१. निरयावलिया (कप्पवडिंसिया)
५२. ज्ञाताधर्मकथा

५३. उत्तराध्ययन, अ. २१
५४. अन्तगडदसाओ, पृ. ५-६
५५. भगवतीसूत्र, श. १५
५६. वही, श.१५
५७. निरयावलिका टीका, प. ६
५८. भगवती सूत्र सटीक, सू. २९९, प. ५७८
५९. वही, श. ७, उ. ९, सू. ३०१
६०. वही, सूत्र ३०९
६१. उत्तराध्ययन, अ. लक्ष्मी वल्लभ टीका
६२. वही, प. ११
६३.भरतेश्वर बाहुबली वृत्ति, प. १००-१०१
६४. उत्तराध्ययन २३/६-८
६५. वही २३, प.३९९-४१४
६६. भगवती, श. ११, उ. ९
६७. अनुत्तरौपातिक, पृ. ७०-८३
६८. भगवतीसूत्र ३/१/२७०-२८३
६९. वही, श. ८, उ. ५, पृ. ३६७
७०. वही, श. १८, उ. १०, ६४७
७१. औपपातिकसूत्र अम्बड़ प्रकरण
७१ अ. व्याख्याप्रज्ञप्ति ९/३२/३७१
७२. वही, ९/३२
७३. वही, श. ८, उ. १०
७४. समवायाङ्ग २२
७५. भगवतीसूत्र सटीक ८/१०, प. ७६४-७७८
७६. वही १७/३
७७. वही, श. १८, उ. ७, प. ७५०-७५१
७८. वही, श. ७, उ. १०, पृ. ३२३-३२४
७९. वही ११/११/४२४/४३२
८०. (क) आवश्यकचूर्णि उत्त., पत्र २०३-२०४
(ख) हारिभद्रीया वृत्ति ७१५-७१६
(ग) आवश्यकनिर्युक्ति दीपिका, गाथा १२०५
८१. (क) उत्तराध्ययन सटीक, अ. १०, पत्र १५४
(ख) त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र १०/९/७४
८२. भगवती, श. ७, उ. १०, पृ. ३२५ -३२६
८३. वही, श. ७, उ. १०, पृ. ३२६-३२७
८४. वही, श. ७, उ. १०, पृ. ३२७
८५. वही, श. १, उ.१०, पृ. १०२-१०३
८६. वही, श. १, उ.१०, पृ. १०६
८७. वही, श. २, उ.१, पृ. १३१-१३२
८८. वही, श. २, उ.५, पृ. १४१
८९. वही, श. ५, उ.३, पृ. २१४
९०. वही, श. ५, उ.६, पृ. २३०
९१. वही, श. ६, उ.९, पृ. २८४-२८५
९२. वही, श. ६, उ.९, पृ. २८५-२८६
९३. (क) त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र १०/१३/३२, ७२
(ख) स्वप्न व उनके फलों का कथन सौभाग्य पञ्चम्यादि पर्व कथा के दीपमालिका के व्याख्यान में पत्र ८१-८२ में भी आधार पर है।
९४. कल्पसूत्र सुबोधिका टीका, प. ४९३
९५. ''तह गर्दभिल्लरज्जस्स ठायगो कालगायरियो होहि।
तेवण्ण चउ सएहिं, गुणसमकलिय सुअपउत्ती॥''
९६. (क) कल्पसूत्र
(ख) महावीर चरियं प्रस्ताव ८/९
९७. त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरियं १०/१३/२१८-२२०
९८. (क) समवायांग ५१
(ख) कल्पसूत्र १४७
९९. भगवान महावीरः एक अनुशीलन, पृ. ५९९ (आचार्य देवेन्द्र मुनि)
१००. (क) भगवती १४/७
(ख) गौतम को समझाने के लिए प्रभु महावीर ने उत्तराध्ययन सूत्र १०/२८ में बहुत प्रयास किया है।
१०१. (क) कल्पसूत्र १२७
(ख) त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र १०/१५/२४७-२४८
(ग) प्रकल्पन महापुरिस चरियं, पृ. ३३१४
१०२. त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र १०/१३/२४९-२७१